



किन्नोरीड कद् हुशै किन्नौरी भाषा प्रवेशिका KINNAURI PRIMER



ई-पाठशाला

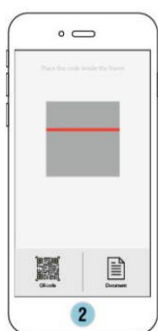
क्यूआर (QR) कोड से संबंधित ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए उपयोगकर्ताओं के लिए चरणबद्ध मार्गदर्शिका

प्रत्येक अध्याय के पहले पृष्ठ पर स्थित कोड बॉक्स को क्विक रिस्पॉन्स कोड – क्यूआर (QR) कोड कहते हैं। यह आपको अध्याय में दिए गए विषयों से संबंधित ई-सामग्री, जैसे ऑडियो, वीडियो, मल्टीमीडिया, पाठ्य-सामग्री आदि को प्राप्त करने में सहायता करेगा। पहला क्यूआर कोड संपूर्ण ई-पाठ्यपुस्तक प्राप्त करने के लिए है और प्रत्येक अध्याय में दिए गए क्यूआर कोड उस अध्याय से संबंधित ई-सामग्री प्राप्त करने में मदद करेंगे। यह प्रक्रिया आपको आनंदपूर्ण तरीके से सीखने में मदद करेगी।

अपने मोबाइल फ़ोन या टेबलेट द्वारा निम्नवत् चरणों का पालन कर और ई-पाठशाला epathshala.nic.in के माध्यम से ई-सामग्री प्राप्त करें।



प्ले स्टोर से ई-पाठशाला स्कैनर एप इंस्टॉल करें और इसे खोलें



क्यूआर कोड स्कैनिंग विंडो को तैयार रखें



स्कैनर से क्यूआर कोड को स्कैन करें



लिंक को सिलेक्ट एवं क्लिक करें



उपलब्ध ई-सामग्री का प्रयोग करें

डेस्कटॉप या लैपटॉप पर ई-पाठशाला द्वारा ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए नीचे दिए गए चरणों का पालन करें—
<https://epathshala.nic.in/topics.php> पर जाएँ और क्यूआर कोड के नीचे दिए गए एल्फान्यूमेरिक कोड को दर्ज करें।

दीक्षा

 दीक्षा एप को गुगल प्लेस्टोर से डाउनलोड करें फिर नीचे दिए गए चरणों का पालन करें। दीक्षा का उपयोग करते हुए आप अपने स्मार्टफोन या टेबलेट से ई-सामग्री प्राप्त करें।



अपनी पसंदीदा भाषा का चयन करें



अपनी भूमिका चुनें—शिक्षक या विद्यार्थी



पहुँच प्रदान करें और एप को अनुमति दें



क्यूआर कोड को स्कैन करने के लिए टैप करें



कैमरा पाठ्यपुस्तक के क्यूआर कोड पर फोकस करें



क्लिक करके क्यूआर कोड से संबंधित ई-सामग्री प्ले करें

डेस्कटॉप या लैपटॉप पर दीक्षा का उपयोग करते हुए ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए नीचे बताए गए चरणों का पालन करें—
<https://diksha.gov.in/resources> पर जाएँ और क्यूआर कोड के नीचे दिए गए एल्फान्यूमेरिक कोड को दर्ज करें।



“ जैसे हमारे जीवन को हमारी मां गढ़ती है, वैसे ही मातृभाषा भी हमारे जीवन को गढ़ती है। आजादी के 75 साल बाद भी कुछ लोग ऐसे मानसिक द्वन्द्व में जी रहे हैं, जिसके कारण उन्हें अपनी भाषा, अपने पहनावे, अपने खान-पान को लेकर एक संकोच होता है। जबकि विश्व में कहीं और ऐसा नहीं है। हमारी मातृभाषा है, हमें उसे गर्व के साथ बोलना चाहिए। और हमारा भारत तो भाषाओं के मामले में इतना समृद्ध है कि उसकी तुलना ही नहीं हो सकती। हमारी भाषाओं की सबसे बड़ी खूबसूरती यह है कि कश्मीर से कन्याकुमारी तक, कच्छ से कोहिमा तक सैकड़ों भाषाएं, हजारों बोलियाँ एक दूसरे से अलग लेकिन एक दूसरे में रची-बसी हुई हैं। भाषा अनेक पर भाव एक। सदियों से हमारी भाषाएं एक दूसरे से सीखते हुए खुद को परिष्कृत करती रही हैं। एक दूसरे का विकास कर रही हैं।”

श्री नरेंद्र मोदी

माननीय प्रधानमंत्री, भारत

(27 फरवरी, 2022; मन की बात कार्यक्रम में)

किन्नोरीड कद् हुशै
किन्नोरी भाषा प्रवेशिका
KINNAURI PRIMER



भारतीय भाषा संस्थान

Central Institute of Indian Languages
(Department of Higher Education, Ministry of Education, GoI)
Manasagangotri, Mysuru - 570 006
Ph: 0821 2515820 (Director)
email: ada-ciilmys@gov.in



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

National Council of Educational Research and Training
Sri Aurobindo Marg
New Delhi - 110016
Ph: 011 2696 2580
email: dceta.ncert@nic.in

किन्नोरीड कद् हुशै

किन्नोरी भाषा प्रवेशिका

KINNAURI PRIMER

A basal reader of Kinnauri alphabet and basic numerals for the kids of Balvatika/Anganwadi levels and adult literacy programmes through andragogy, prepared by Central Institute of Indian languages (CIIL), Mysuru and National Council of Educational Research and Training (NCERT), New Delhi.

Editors

Dinesh Prasad Saklani

Shailendra Mohan

Pawan Kumar

ISBN: 978-81-19411-75-7

First Edition: March 09, 2024

Published by CIIL, Mysuru in collaboration with NCERT, New Delhi.

© CIIL & NCERT 2024

All rights reserved. No part of this primer may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted into any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying and recording or otherwise, without the prior permission of the publisher.

Cover Design: G. Yuvaraj

Cover Photo: Padam Mehta, Rajendra Negi, Shaheen Bisht, and Hiteshwari Negi

Printed by CIIL, Mysuru and NCERT, New Delhi.



संदेश

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के विकसित भारत 2047 के संकल्प के मार्ग का प्रमुख अवयव भारतीय भाषाएँ हैं, जिनसे ज्ञान-विज्ञान एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की पहुंच देश के समस्त बच्चों तक सुनिश्चित हो सकती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारतीय भाषाओं में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को स्कूल और उच्चतर शिक्षा के प्रत्येक स्तर के साथ एकीकृत करने की आवश्यकता पर बल देती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की सिफारिशों के अनुरूप ही बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022, तीन वर्ष से आठ वर्ष तक की आयु-वर्ग के बच्चों के लिए मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में शिक्षण कार्य को दृष्टिगत रखकर तैयार की गई है। अनेकानेक शोधों के माध्यम से भी यही निष्कर्ष निकाला गया है कि जब छात्रों को उनकी मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में अनुदेशन दिया जाता है तब उनका शिक्षण-अधिगम अपेक्षाकृत उत्तम होता है। इसीलिए भारत सरकार ने बाल वाटिका, आद्य साक्षरता तथा बुनियादी साक्षरता की शुरुआत की है। देश के विभिन्न भागों का दौरा करते हुए तथा वहाँ के शिक्षकों एवं बच्चों से बातचीत करते समय हमें इस बात का बोध हुआ कि भारत की विभिन्न भाषाओं तथा मातृभाषाओं में भाषा शिक्षा से संबंधित महत्वपूर्ण पुस्तकों की आवश्यकता है।

अतः हमने एन.सी.ई.आर.टी तथा भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरु को देश की सभी भाषाओं तथा मातृभाषाओं में ऐसी प्रवेशिकाओं का निर्माण करने हेतु उत्प्रेरित किया जो न केवल वैज्ञानिक विधि से अक्षर-पहचान के साथ पढ़ना और लिखना सीखने में मदद करें, बल्कि बच्चों को वहाँ के सांस्कृतिक पहलुओं का ज्ञान भी करवाएँ। अपनी भाषा तथा संस्कृति का ज्ञान आत्मनिर्भरता तथा विकास की ओर पहला कदम होता है।

ये प्रवेशिकाएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के अनुसार स्थानीय सामग्री के उदाहरण प्रस्तुत करते हुए तैयार की गई हैं। इन प्रवेशिकाओं की मदद से बच्चे अपनी भाषाओं तथा मातृभाषाओं की ध्वनियों, वर्णों, शब्दों एवं वाक्य विन्यास के साथ-साथ संबंधित राज्य की राजभाषाओं तथा सभ्यता एवं संस्कृति का भी बुनियादी ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। इन पहलों के माध्यम से हमारे बच्चे भारतीय ज्ञान-परम्परा की समृद्ध विरासत से भी परिचित होंगे। डिजिटल प्रारूप में ये सभी प्रवेशिकाएँ बच्चों, शिक्षकों तथा अभिभावकों को पूर्णतः निःशुल्क रूप से भी उपलब्ध होंगी।

इस अवसर पर मैं समिति के सदस्यों, विशेषज्ञों और भाषा शिक्षकों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने इन प्रवेशिकाओं को तैयार करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। मुझे विश्वास है कि ये प्रवेशिकाएँ बच्चों, शिक्षकों तथा अभिभावकों के लिए बहुत उपयोगी साबित होंगी।


(धर्मेन्द्र प्रधान)



प्राक्थन

भाषा समाज का एक अभिन्न अंग है। भाषा संस्कृति का एक उपादान है, समुदाय की पहचान है और पीढ़ियों के लिए ज्ञान के संचरण का स्रोत भी है। भाषा सभ्यता के विकास को प्रेरित करती है और मानव को उच्चतर स्तर पर रूपांतरित करती है। यह तथ्य कि भारत एक बहुभाषिक देश है-एक ओर भारत की भाषिक विविधता को दर्शाता है तो दूसरी ओर यह भी बताता है कि कैसे यह एक सामाजिक विविधता है। साथ ही यह भी बताता है कि लगभग सभी भारतीय सही अर्थों में द्विभाषिक या बहुभाषिक हैं। हम जानते हैं कि भारत की 2011 की जनगणना में 121 भाषाओं और 270 मातृभाषाओं/बोलियों की सूची दी गई है। भारतीय संविधान के खंड XVII और 8वीं अनुसूची की 343 से 351 तक की धाराएँ देश की भाषाओं के मुद्दों पर हैं। बच्चों का सामाजिक एवं संज्ञानात्मक विकास भाषा के द्वारा समृद्ध होता है, क्योंकि समाजीकरण का कार्य मातृभाषा अथवा परिवार एवं पड़ोस की भाषा में होता है। यह एक स्थापित बिंदु है कि बच्चों के पास भाषाओं को सीखने की जन्मजात क्षमता होती है, अतः राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में विद्यालयी शिक्षा के प्रारंभिक दिनों (आधारभूत चरण) में शिक्षा हेतु माध्यम के रूप में मातृभाषा के उपयोग और मातृभाषा-आधारित शिक्षा पर अत्यधिक बल दिया गया है।

विद्यालयों में बच्चों की मातृभाषा की उपलब्धता को सुनिश्चित करना और यह देखना कि बच्चे किसी अपरिचित भाषा में शिक्षा-प्राप्ति के भय से मुक्त हों-ये किसी भी सफल शिक्षा-व्यवस्था के शाश्वत सिद्धांत हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भाषा खंड को 'बहुभाषिकता और भाषा की शक्ति' का शीर्षक दिया गया है जो बहुत ही सटीक है तथा यह विद्यालयी शिक्षा में सभी भाषाओं के विकास के महत्व पर बल देता है। भारत सरकार देशभर में मातृभाषा-आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए कटिबद्ध है और विभिन्न पहलों एवं परियोजनाओं के माध्यम से इसे लागू करने हेतु सतत प्रयास कर रही है। बच्चों की घर की भाषा में शिक्षा की यह मजबूत नींव न केवल भविष्य में विद्यालय एवं उच्चतर शिक्षा को सबल बनाने में सहायक होगी बल्कि इसका एक उद्देश्य यह भी है कि बच्चे अन्य भाषाओं को सीखने के लिए भी प्रेरित हों।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) एवं भारतीय भाषा संस्थान (सीआईआईएल) द्वारा संयुक्त रूप से तैयार प्रवेशिकाओं) प्राइमरों(का लक्ष्य छोटे बच्चों या अन्य भाषा सीखने वाले किसी अन्य व्यक्ति को मुद्रित एवं दृश्य माध्यम से भाषाओं से सुपरिचित बनाना है। इन प्रवेशिकाओं का विकास विलुप्ति का खतरा झेल रही अनेक भाषाओं के दस्तावेजीकरण के प्रयासों में भी अपना योगदान दे रहा है। अतः भाषाओं का संरक्षण और विकास करना तथा सभी भाषाओं को विद्यालय में लाकर विद्यालयी शिक्षा, विशेषकर इसके निर्माणात्मक वर्षों को समावेशी बनाना प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है। कहने की आवश्यकता नहीं कि यह भारतीय संविधान की समानाधिकारवादी लोकतंत्र की आत्मा के अनुरूप है और प्रत्येक समुदाय एवं व्यक्ति के भाषिक अधिकारों का सुदृढीकरण है। मुझे विश्वास है कि ये पुस्तिकाएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में परिकल्पित बहुभाषिक शिक्षा की अवधारणा को प्रोत्साहन प्रदान करेंगी। साथ ही अनेक जनजातीय, अल्पसंख्यक एवं अल्पप्रयुक्त भाषाओं में अंतर्वस्तु के विकास का मार्ग भी प्रशस्त करेंगी तथा एनसीईआरटी द्वारा आधारभूत चरण हेतु विकसित अन्य सामग्रियों, जैसे- बालवाटिका, विद्या प्रवेश आदि के लिए सहायक सामग्री का कार्य करेंगी। शिक्षकों, अभिभावकों एवं बच्चों की शिक्षा के लिए कार्य करने वाले शिक्षाविदों के हाथों में इन प्रवेशिकाओं को देते हुए मैं माननीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान जी का उनके प्रेरणादायक मार्गदर्शन के लिए अनुगृहीत हूँ। मैं इन प्रवेशिकाओं के सफल विकास एवं प्रकाशन हेतु गठित समिति के कार्यकारी समूहों के अध्यक्षों, सदस्यों तथा समन्वयकों को भी धन्यवाद देता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार; एनसीईआरटी एवं सीआईआईएल का यह संयुक्त प्रयास मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा के उत्थान हेतु राज्यों एवं शिक्षा के अभिकरणों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा और बहुभाषी शिक्षा को प्रोत्साहन देने वाले एक राष्ट्रीय अभियान का रूप लेगा ताकि अपनी मातृभाषा का एवं अपनी मातृभाषा में अध्ययन करने के हर विद्यार्थी के अधिकार की रक्षा हो सके।

मार्च, 2024
नई दिल्ली

प्रो. दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

भूमिका / Introduction

भारत सदियों से एक बहुभाषिक देश रहा है जहाँ कई भाषाएँ/मातृभाषाएँ बोली जाती हैं। यह देश की एक महत्वपूर्ण विशेषता है कि हम अपने दैनिक व्यवहार में कई भाषाओं का प्रयोग करते हैं जो हमें एक साथ बांधती हैं और एकजुट रखती हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 में इस बात पर अत्यधिक बल दिया गया है कि भारत की बहुभाषिक प्रकृति एक बहुत बड़ी संपत्ति है जिसका देश के सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक और शैक्षणिक विकास के लिए कुशलतापूर्वक उपयोग करने की आवश्यकता है। यह शिक्षा में हर स्तर पर बहुभाषावाद को बढ़ावा देने की अनुशंसा करती है ताकि विद्यार्थियों को अपनी भाषाओं में अध्ययन करने का अवसर प्राप्त हो सके। सभी भारतीय भाषाओं में शिक्षण-अधिगम सामग्री के सृजन से इस बहुभाषिक संपदा में वृद्धि होगी और इससे विकसित भारत के निर्माण में बेहतर योगदान हो सकेगा। एनईपी 2020 की अनुशंसाओं के अनुरूप, प्रारंभिक कक्षा की प्रवेशिकाओं के विकास के लिए एक व्यापक और समावेशी दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो भारत के प्रत्येक क्षेत्र की अनोखी भाषाई और सांस्कृतिक विशेषताओं के अनुरूप हो। इन प्रवेशिकाओं का उद्देश्य प्रारंभिक कक्षा के छात्रों को पढ़ने और लिखने में प्रवीणता प्रदान करना और उनकी रचनात्मकता और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देना है। यह किसी भाषा के प्रतीकों और उसकी वर्णमाला के अक्षरों के बोध, अभिज्ञान एवं उच्चारण की कुंजी है। ये प्रवेशिकाएँ बच्चों को इन अक्षरों के एक या एक से अधिक समुच्चयों के अर्थ से भी अवगत कराती हैं जो उनके संयोजनों जैसे, शब्द में उन अक्षरों की आरंभिक, माध्यमिक या अंतस्थ स्थिति से बनते हैं। इसके अतिरिक्त, ये बाद में बताए गये अक्षरों के लेखन के अभ्यास को सुगम बनाने हेतु उदाहरण प्रस्तुत करते हैं और ये शिशुगीत/छंद/तुकांत बच्चों की भाषा तथा उनके संज्ञानात्मक कौशलों के विकास में भी सहायक सिद्ध होगी।

Bharat has been a multilingual country for ages, with many languages spoken in different regions of the country. Using multiple languages in our verbal repertoire is a common characteristic of the country; it binds us together and keeps us united. National Education Policy (NEP) 2020 strongly emphasises the idea, that the multilingual nature of Bharat is a huge asset that needs to be utilized efficiently for the socio-cultural, economic, and educational development of the nation. It recommends the promotion of multilingualism in education at every level so that learners get the opportunity to study in their own language(s). The creation of teaching-learning material in all Bharatiya languages will thus boost this multilingual asset and allow it to make a better contribution to 'Viksit Bharat'. That said, developing early-grade primers in alignment with NEP 2020 requires a comprehensive and inclusive approach that addresses the unique linguistic and cultural characteristics of each region in India. These primers aim to provide not only language proficiency in reading and writing but also foster creativity and critical thinking among the early-stage learners. It is a key to pronouncing, recognizing, comprehending letters of the alphabet and symbols of a language. It also familiarizes children with the meaning of one or more sets of these letters made through their combinations such as letters in initial, medial and final positions of the word. Moreover, it provides examples that facilitate writing practice of the letters introduced later; and the rhymes will help students in their language development and cognitive skills.

मार्च, 2024
मैसूरु

प्रो. शैलेंद्र मोहन
निदेशक
भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरु

CIIL-NCERT Primer Series: Kinnauri Primer Development Team

Guidance

Dinesh Prasad Saklani, Director, NCERT, New Delhi

Shailendra Mohan, Director, CIIL, Mysuru

Chamu Krishna Shastry, Chairman, Bharatiya Bhasha Samiti (BBS), New Delhi

Advisors

Amarendra P. Behera, Joint Director, Central Institute of Educational Technology, NCERT, New Delhi

Ramanujam Meganathan, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi

Awadesh Kumar Mishra, Chief Coordinator (Academic), BBS, New Delhi

Sandhya Singh, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi

Mohd. Faruq Ansari, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi

Pankaj Dwivedi, Assistant Director (Admin) i/c, CIIL, Mysuru

Member Coordinator

Pawan Kumar, Lecturer, Northern Regional Language Centre, Punjabi University Campus, Patiala

Resource Person

Harvinder Negi, (Vill. Ropa, Kinnaur), Assistant Professor of English, GLA University, Mathura

Hindi Reviewers

Biresh Kumar, Senior Resource Person, National Testing Service-India, CIIL, Mysuru

Sumitra Mishra, Junior Resource Person, National Testing Service-India, CIIL, Mysuru

Kinnauri Reviewers

Smt. Rama Negi, Vill. Chitkul, Tehsil Sangla, Distt. Kinnaur

Design Team

Nandakumar L, JRP (Technical), National Translation Mission, CIIL, Mysuru

Jewsnrang Basumatary, Resource Person (Teaching) in Bodo, North Easter Regional Language Centre, (CIIL), Guwahati

Saravanan A S, Graphic Editor, Scheme for Protection and Preservation of Endangered Languages (SPPEL), CIIL, Mysuru

Shwetha K, Artist, Bharatavani, CIIL, Mysuru

Puttaraju K, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru

Shobharani B, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru

G. Yuvaraj, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru

We sincerely acknowledge the copyright holders of the pictures used in this primer, anonymously and we also declare that the pictures are used for purely educational purposes only.

कैसे पढ़ानी है भाषा प्रवेशिका (किन्नौरी)

किन्नौर हिमाचल प्रदेश का एक जिला है। यह दो क्षेत्रों में विभाजित है-निचला किन्नौर, जिसमें चौरा और रिब्बा के बीच के क्षेत्र शामिल हैं, और ऊपरी किन्नौर जिसमें रिब्बा से पूह तक के क्षेत्र शामिल हैं। भाषावैज्ञानिक दृष्टि से किन्नौर के भाषाई परिदृश्य पर चीनी-तिब्बती भाषाओं का वर्चस्व रहा है। 'किन्नौरी' शब्द का प्रयोग किन्नौर में बोली जाने वाली किसी भी भाषा के लिए किया जाता है। इस प्रवेशिका के 'किन्नौरी' का प्रयोग किन्नौर के निचले-मध्य क्षेत्र और ऊपरी क्षेत्र के कुछ गांवों में प्रमुखता से बोली जाने वाली भाषा के लिए किया गया है।

किन्नौरी भाषा की यह प्रवेशिका किन्नौर के प्रारंभिक स्कूली शिक्षा चरण के शिक्षार्थियों के लिए किन्नौरी की वर्ण-माला के व्यावहारिक ज्ञान की मार्गदर्शिका है। यह शिक्षार्थियों, शिक्षकों या किसी भी व्यक्ति के स्वतंत्र अध्ययन के लिए उपयुक्त है। इसकी प्रमुख विशेषताओं में शामिल हैं-

किन्नौरी वर्ण) स्वर और व्यंजन(; शब्द और प्रारंभिक स्तर के छंद; किन्नौरी में प्रारंभिक, मध्य और अंतिम स्थिति में वर्ण का प्रतिनिधित्व करने वाले शब्दों के उदाहरण; प्रत्येक वर्ण के लिए चित्र और किन्नौरी में 1 से 20 तक गिनती।

इस प्रवेशिका में किन्नौरी ध्वनियों को देवनागरी लिपि में दर्शाया गया है। किन्नौरी भाषा में व्यंजन नियमित रूप से अनुनासिक होते हैं। हालाँकि स्वर अनुनासिक की उपस्थिति सीमांत या प्रतिबंधित है और अधिकतर यह ऋण शब्दों के साथ ही घटित होती है। जैसे 'बंडारस', 'संतरा' और अंग्रेज आदि। भाषा की मूल ध्वनियों के वर्णन पर कायम रहने के लिए इस पुस्तक में अनुनासिक स्वरों को हटा दिया गया है।

हिंदी वर्णमाला के ऋ, अं, अः, स्वर और ड, ज, ढ, ण, ध, भ, ष, क्ष, त्र, ज्ञ, व्यंजन किन्नौरी मूल वर्ण के रूप में उपस्थित नहीं हैं और इस प्रवेशिका में भी उन्हें बाहर रखा गया है। प्रवेशिका में किन्नौरी ध्वनि के पूर्ण और संक्षिप्त रूप को दर्शाने के लिए (्) और 'मूल वर्ण या /ा/ लिया गया है :- संक्षिप्त रूप - 'क्', पूर्ण रूप - 'क', दीर्घ रूप - 'ा' और जहां भी संभव हो, ध्वनियों और उनके वर्तनी प्रतिनिधित्व को दर्शाया गया है। कुछ उदाहरणों में चम में /च/ त्+स, जोड़ में /ज/ द+स प्रतीत होता है जो तिब्बती प्रभाव के रूप में सामने आता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं बुनियादी स्तर के राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा 2022 के अंतर्गत तीन से आठ साल तक के बच्चों को उनकी मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में शिक्षा देने की व्यवस्था की गई है। भारत के ग्रामीण इलाकों में बच्चे कक्षा की शिक्षा-दान प्रणाली को ठीक से समझ नहीं पाते हैं। यह बात विद्यालय की शिक्षा व्यवस्था को प्रभावित करती है। इसीलिए केंद्र सरकार ने तीन से आठ वर्ष तक के बच्चों को बाल वाटिका एवं प्रथम तथा द्वितीय कक्षा के बच्चों को आद्य-प्राथमिक स्तर पर मौखिक साक्षरता प्रदान करने की व्यवस्था की है। इसमें स्थानीय गीतों एवं कविताओं के माध्यम से बच्चों की मौखिक भाषा के विकास पर बल दिया गया है। यह काम प्रवेशिकाओं में कविताओं तथा चित्रों के माध्यम से किया जा रहा है। इसके साथ ही बच्चों के ध्वनि परिचय, वर्ण परिचय एवं लेखन के अभ्यास के लिए भी भाषा प्रवेशिका का प्रयोग किया जा रहा है।

बाल वाटिका स्तर से तृतीय कक्षा तक बच्चों को उनकी मातृभाषा में पढ़ाने से उनके बौद्धिक विकास के साथ-साथ उनकी सृजनशीलता एवं कल्पना शक्ति का विकास भी हो सकता है। बच्चे अपनी मातृभाषा में पढ़ना-लिखना सीखने के साथ-साथ धीरे-धीरे हिंदी भाषा में कैसे पढ़-लिख सकते हैं, इसकी सटीक पद्धति बुनियादी स्तर के राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा 2022 में विस्तृत रूप से बताई गई है। बच्चे पहले पढ़ना-लिखना सीखते हैं इसलिए हिंदी भाषा की वर्णमाला की पुस्तकों में बच्चों की मातृभाषा एवं विद्यालय की हिंदी भाषा की समस्त ध्वनियों, वर्णों एवं मात्राओं को स्थान दिया गया है। पुस्तकों में दिये गये शब्दों का संग्रह बच्चों की संस्कृति एवं परिवेश से किया गया है।

बहुभाषी शिक्षा का मूल उद्देश्य बच्चों को घर की भाषा से पढ़ाना-लिखाना शुरू कर के राज्य की भाषा में पढ़ने-लिखने की उनकी दक्षता को बढ़ाना है। किन्नौरी और हिंदी भाषा में प्रस्तुत यह प्रवेशिका हिमाचल प्रदेश राज्य के शिक्षकों एवं छात्रों के लिए है।

मौलिक साक्षरता के चार प्रमुख चरण होते हैं। पहले चरण में कविताओं कथाओं एवं चित्रों के माध्यम से बच्चों का बौद्धिक विकास किया जाता है। उसके बाद भाषा-शिक्षण के लिए बच्चों को वस्तुओं के साथ-साथ शब्दों से भी परिचित कराया जाता है और शब्दों में व्यवस्थित अक्षरों की पहचान कराई जाती है। इस पर्याय-क्रम में बच्चे अलग-अलग अक्षरों को पहचाना सीखते हैं। इस प्रकार बच्चे ध्वनि एवं वर्ण के बीच के संपर्क को समझते हैं। भाषा प्रवेशिका को कैसे पढ़ना है, इसके मूल बिंदुओं को नीचे लिखा गया है-

ध्वनि परिचय: बच्चे चित्र देखकर उस वस्तु का नाम बताएँगे। शिक्षक पूछेंगे कि चित्र का नाम किस ध्वनि से शुरू होता है? जैसे किन्नोरी भाषा का शब्द 'अदरो' और बच्चे चित्र को देखकर यह पहचानेंगे कि यह शब्द 'अ' की ध्वनि से शुरू होता है।

वर्ण परिचय: शिक्षक पहले बच्चों को बताएँगे कि 'अ' वर्ण कैसा दिखता है। फिर उनसे दिये गये कुछ शब्दों में 'अ' अक्षर या वर्ण को पहचानने के लिए कहेंगे। बच्चे तीन-चार शब्दों में से 'अ' अक्षर को पहचान कर उसकी ध्वनि का उच्चारण करेंगे और उसे लिखने का अभ्यास करेंगे।

पढ़ना: बच्चे चित्र देखकर अपनी भाषा में शब्द बोलेंगे। उस शब्द पर उंगली को चलाकर बच्चे किन्नोरी शब्द 'अदरो' को पढ़ेंगे। इसी प्रकार के अन्य शब्दों को पढ़कर वे 'अ' वर्ण को पहचानेंगे और उसका उच्चारण करेंगे। बच्चे शिक्षकों को यह बताएँगे कि 'अ' अक्षर शब्द के आरंभ में आता है या बीच में या अंत में।

शिक्षक बोर्ड पर 'अदरो' के अलावा तीन-चार अन्य शब्द भी लिखेंगे। फिर बच्चों को एक-एक करके बुलाएँगे और उनसे शब्दों को पढ़ने एवं वर्णों को पहचानने के लिए कहेंगे। चूँकि ये सारे शब्द बच्चों के जाने-पहचाने परिवेश से लिए जाते हैं अतः वे प्रवेशिका में चित्रों को देखकर शब्दों को पहचान पाएँगे और उन्हें सहजता से बोल पाएँगे। शिक्षक कोई एक शब्द लिखेंगे और उसके प्रत्येक वर्ण को अलग-अलग पढ़ने के लिए बच्चों से कहेंगे। फिर वर्णों को जोड़कर उन शब्दों को पढ़ने के लिए कहेंगे। इससे बच्चों का वर्ण परिचय, शब्द परिचय एवं ध्वनि परिचय हो जाएगा। एक बच्चे द्वारा शब्द को पढ़ने के समय अन्य बच्चे उसके साथ मिलकर उस शब्द को दुहराएँगे। इसे 'सामूहिक' पठन कहते हैं।

लेखन: शिक्षक बच्चों को पहले 'अदरो' शब्द के 'अ' अक्षर को लिखना सिखाएँगे। इसके लिए कलम/पेंसिल को कैसे चलाया जाता है, यह भी सिखाएँगे। इसे 'सहायक लेखन' कहा जाता है। इसके बाद बच्चे प्रवेशिका में दिये गये खाली स्थान में 'अ' अक्षर को स्वयं लिखेंगे। इस पूरी प्रक्रिया में शिक्षक बच्चों की सहायता करेंगे।

बच्चों की मौखिक भाषा के विकास के लिए हर प्रविष्टि में दो-तीन पंक्तियों की कविता दी गई है। इसको पढ़ कर एवं गाकर शिक्षक बच्चों के साथ उस पर चर्चा करेंगे। शिक्षक विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध बच्चों की कहानी की किताब से कहानियाँ सुनाकर बच्चों के साथ उस पर चर्चा करेंगे। वे प्रथम एवं द्वितीय कक्षा के बच्चों को उनकी मातृभाषा में कहानियाँ एवं गीत सुनाएँगे।

इस प्रवेशिका में जितने शब्द दिए गये हैं वे साक्षरता का नमूना मात्र हैं। लेकिन बच्चे अपनी भाषा के सैकड़ों शब्दों को जानते हैं। इसलिए एक वर्ण वाला शब्द पूछने से वे अनेक शब्द सुना सकते हैं। जैसे, शिक्षक यह पूछेंगे कि 'अ' से शुरू होने वाले कुछ शब्द सुनाओ तो बच्चे 'अपी', 'अग', 'अरबो' आदि शब्दों को बता सकते हैं।

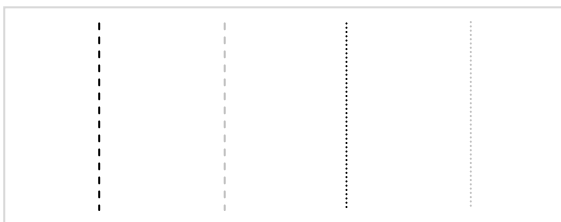
नोट: उम्मीद है कि शिक्षक बच्चों को पढ़ाने के लिए इस पुस्तक का उपयोग विवेकपूर्ण ढंग से करेंगे और उच्चारणों की उन विविधताओं को स्वीकार करेंगे जिन्हें प्रवेशिका में प्रयुक्त देवनागरी लिपि में प्रस्तुत करना कठिन था।

राज्य के विद्यालयों में वितरित 'शिक्षक सहायक पुस्तिका' को पढ़कर मौलिक साक्षरता के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

निम्नलिखित पंक्तियों को देखो और खाली स्थानों में उसी तरह की रेखाएं बनाओ:

खड़ी रेखा

:



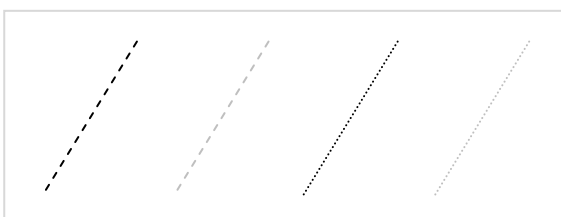
क्षैतिज रेखा

:



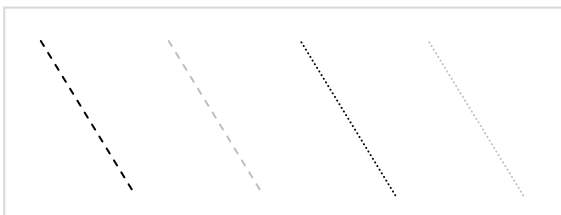
तिरछी रेखा 1

:



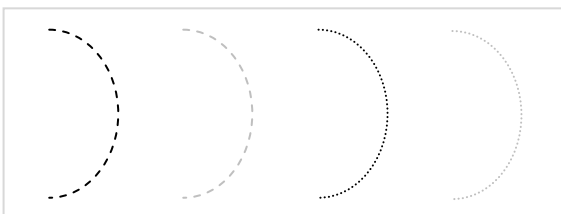
तिरछी रेखा 2

:



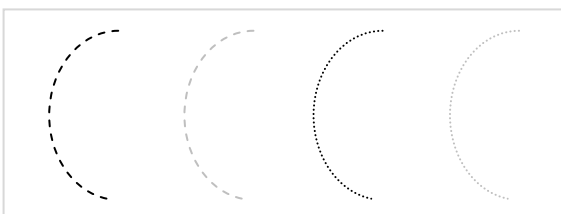
वक्राकर रेखा 1

:



वक्राकर रेखा 2

:



नोट: शिक्षक यह सिखाएँगे कि कलम / पेंसिल को कैसे पकड़ें और दिये गये स्थानों में रेखाएं कैसे खींचें।

किन्नौरी वर्णमाला

अ आ इ ई उ ऊ

ए ऐ ओ औ

क ख ग ङ

च छ ज

ट ठ ड

त थ द न

प फ ब म

य र ल व

श स ह

स्वर

अ आ इ ई उ ऊ

ए ऐ ओ औ

मात्राएं

आ=ा इ=ि ई=ी उ=ु ऊ=ू

ए=े ऐ=ै ओ=ो औ=ौ

व्यंजन

क ख ग ङ च छ ज

ट ठ ड त थ द न

प फ ब म य र ल

व श स ह

अ

अपी

दादी

अपी ले अपी

कि देस्क स्नयओ हति माय
कि ओमचू कोथा रिडिन



अग

गुफा

अरबो

चिलमची

अदरो

अदरक

अ

अ

अ

आ

आमा

माँ

आ क आमा

आमाऊ युडस मोमा

आमाऊ बोबा मापो तेतै



आडू

आडू

आयनड

थन

फरुआ

फावड़ा

आ

आ

आ

इ

इद

एक

इद रड इद हचिस
अड कोन्या मुलुक

1



इमली

इमली

मिग

आँख

कुइ

कुत्ता

इ

इ

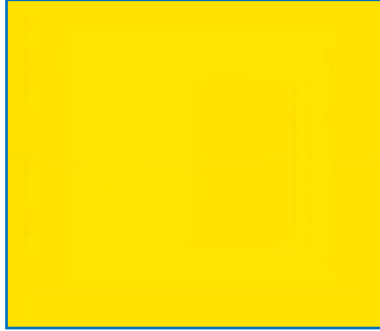
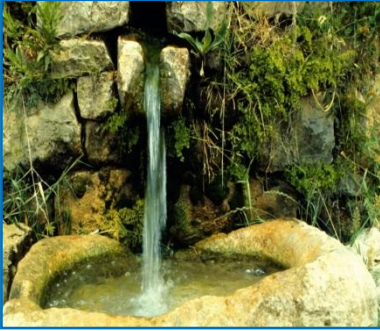
इ

ई

ईट

ईट

ईट रड ईट थिनथिन
दोरिड शेते



9

बई

कुंड

पीक

पीला

गुई

नौ

ई

ई

ई

उ

उख्यङ

फूलों का उत्सव

जुगली उख्यङ रूपी तैरसु
उख्यङ रङो बितीश
रङ ऊ चपतिश



उर्च

भंडारघर

रउलाने

बहरूपिए/
भिखारी

डुडु

उल्लू

उ

उ

उ

ऊ

ऊ

फूल

बीश बदा
रिमानो ऊ बरो
प्याचा चिक्चक्याशो



शू

देवी-देवता

शोरू

ओला

खऊ

खाना

ऊ

ऊ

ऊ

ए

एचकोन

अचकन

किन डेयडो एचकोन वाली शारे
कि ली शारे एचकोन ली शारे



शेल

दवा

छेमर

छिपकली

युने

सूरज

ए

ए

ए

ऐ

ऐरस

शिकारी

ऐरसो छड कोचड
डोग मा लोलो सचो
परेड मा लोलो याचो



रैमो

गिरी

मै

आग

तैलड

तेल

ऐ

ऐ

ऐ

ओ

ओलगा

कुट्ट

ऊपासरीयो ओलगा होद जामा
ओन म बद



ओम

रास्ता

ओसङ

ओस

सेओ

सेब

ओ

ओ

ओ

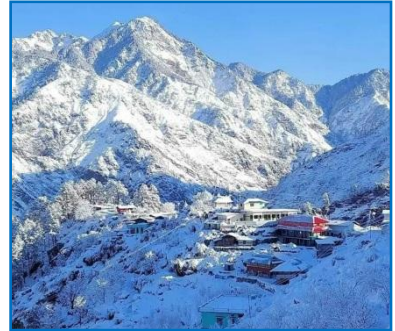
औ

औरस

बढ़ई

इद का अई

औरस शरे-शरे कोठी पडो



फौर

फर्श

खौल

खल

पौम

बर्फ

औ

औ

औ

क

कग

कौआ

कग ली कग

काव काव रिडो

थि कचा तो



16

क्रा

बाल

थुक्पा

शोरबा

सोरुक

सोलह

क

क

क

ख

ख्यर

बकरी के बालों से
बुना बिछौना

अड किमो जारीन
ख्यर पोश केतोक
ख्यर पोशुदेन तोशिश चुल तेलड
रड युद जाते



खेरी

तकले को साधने
का उपकरण

दखड

अंगूर

रिखा

भालू

ख

ख

ख

ग

गर

दाँत

ख गर बीरा
जड गर सूरा



गोलसड

चाँद

कगली

कागज

शिडा

लकड़ी

ग

ग

ग

ड

ड

पाँच

ड प्रच इ रोडस्या म निच
इदी मन-बोनू छडा
इ रोडस्या म निच

5



पितड

दरवाजा

ठडरा

गेंदा

लोसनड

लहसुन

ड

ड

ड

च

चम

ऊन

पडऱो चम पन्ते
फोक दोडी तक्ते



चा

चाय

कुचड

झाडू

ब्रेन्च

टिड्डी

च

च

च

छ

छलीया

मकई

छलीया रिमो
बन्दरा बुलबुल्याशो
छलीया जाओ



छटो

छोटी
टोकरी

छपरड

छत

गच्छड

कमरबंद

छ

छ

छ

ज

जोद

गेहूँ

फागुली बदा

जोद-पग दम-दम जाते



जिलड

जड़

जुटी

चोटी का
परांदा

रुजा

वृद्ध

ज

ज

ज

ट

टानड

गहने

सन्तो बिमु टानड लिशिन
टानड म निमा ग केतोक



6



ट

टुग

छह

ख्योट

चम्मच

ट

ट

ट

ਠ

ਠੇਪਡ

ਟੋਪੀ

ਖੇਰ ਠੇਪਡ ਪੋਕਿਸਿਸ
ਤੇਤੈ ਠੀ ਦੇਨ ਤੋਸਿਸ



ਠੋ

ਜਲਾ ਹੁਆ
ਕੋਯਲਾ

ਬੋਠਡ

ਵੁਖ

ਰੇਠੋ

ਕਢੂ

ਠ

ਠ

ਠ

ड

डिग

हाँडी

साजो बदा

डिगु रल-थुक्पा पाते



डोखड

चट्टान

डालड

टहनी

दोडी

पारंपरिक
पोशाक

ड

ड

ड

त

तोरड

झूला

तोरडो तोशिस
निड रड जिड बियो
समान लि तेलो



तालड

चाबी

बोतो

मकड़ी

लस्ता

कुल्हाड़ी

त

त

त

थ

थडगड

कमरे का खंभा

स्यनो पेरड

कशानु पन्ठडो थडगड देस



थर

तेंदुआ

मलथड

मिट्टी की
छत

तोथी

पलटा

थ

थ

थ

द

दलमड

अनार

शुवीक-शुवीक पोटक्चा
वाल एमकिस जाशो दलमड



दखड

अंगूर

दगलो

कड़ा

गोलमन्द

गुलबंद

द

द

द

न

नालड

नाला

होल्डो नालडो थ योचिच
होल्डो बन्ना होल्डोस फीचो



नड

थाली

तुनड

होठ

चिन

नाखून

न

न

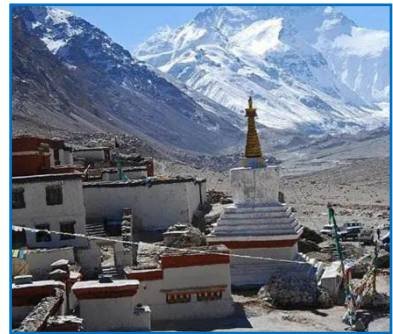
न

प

पनुडः

घास का मैदान

नडः पनुडो युने
जिडः तपडः म बच



पन

पत्थर

पालस

चरवाहा

गोम्पा

मठ

प

प

प

फ

फद

झोला

फद लिशिस बिते
फोलड काते
फोलड जाते



फोलड

फल

फोच

गधा

फ्या

माथा

फ

फ

फ

ब

बखोर

बकरी

अउरस बखरड जेद
डालिङ रड रखरड जाओ
बखोर जेद



बासिङ

बसूला

पशबड

घुटना

छुबा

वस्त्र

ब

ब

ब

म

मोलड

गोबर

तिवारड बदा
मोलड थो थो काते
मोलडिस मेलिड चूलयाते



मेलिड

मिट्टी का
चूल्हा

मार

घी

बाम

ढोल

म

म

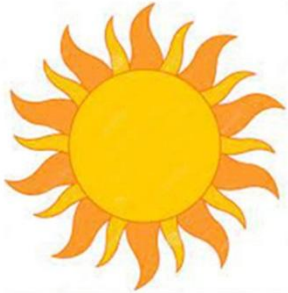
म

य

यङ

मकखी

शोलो हचोसी
यङास कनङ जाचिस



8

युने

सूरज

पियुच

चूहा

राय

आठ

य

य

य

र

रल

चावल

बजारे बिबी थि काते
रल कोनखड काते



रङ्गल

ततैया

सोरड

झील

कुकरी

मुर्गी

र

र

र

ल

लान

हवा

लान निमा लिस्क हचित
लिस्क हचिमा गसा फोकशिमिक



लड

गाय

सोल्व

पौधा

ठोडल

लकड़ी का
कुंदा

ल

ल

ल

व

वल

बर्फ हटाने वाला
बेलचा

वल जूरया ताते
गुनो पौम पेक्ते



वस

शहद

कुवड

कुआँ

वा

घोंसला

व

व

व

श

शगर

शलगम

शगर काते शगर
फन्टिङ लन्ते
कोन्यानु कुते



शा

मांस

पशबड

घुटना

पौश

बिछौना

श

श

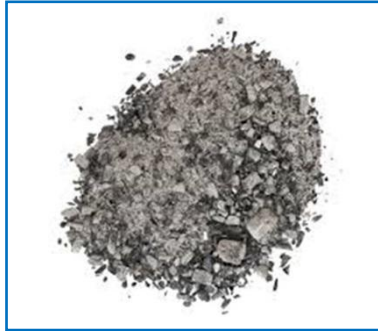
श

स

सन्तड

देव प्रांगण

सुस्करो सन्तडो बिते
रउलाने ख्याते



सपस

साँप

बोस्पा

राख

दमस

बैल

स

स

स

ह

हलू

आलू

हैरत पोचे

हालड लन्ते

हलू पुशतै



हालस

हलवाहा

हरड

हड्डी

होड

कीड़ा

ह

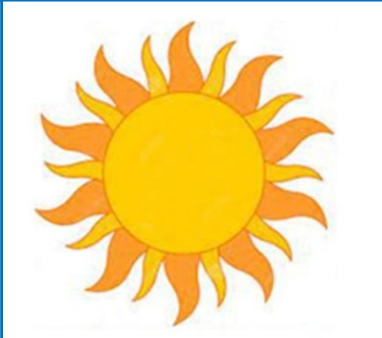
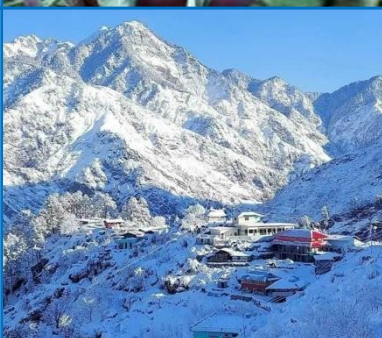
ह

ह

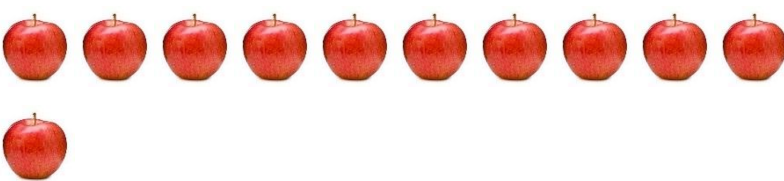
मात्राएँ

अ	ं	गर		ं
आ	ा	रुजा		ा
इ	ि	चिन		ि
ई	ी	जुटी		ी
उ	ु	टुग		ु

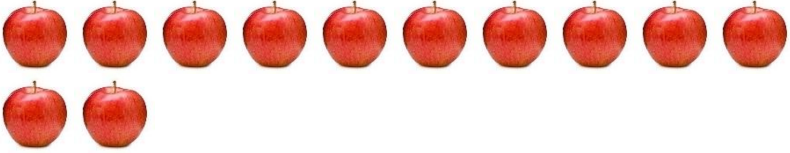
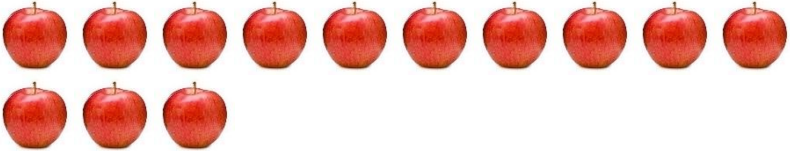
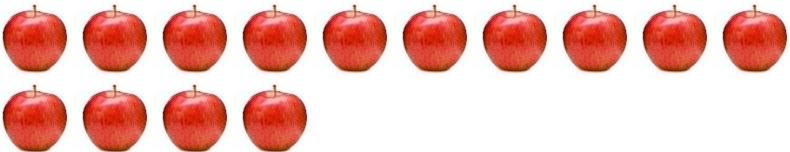
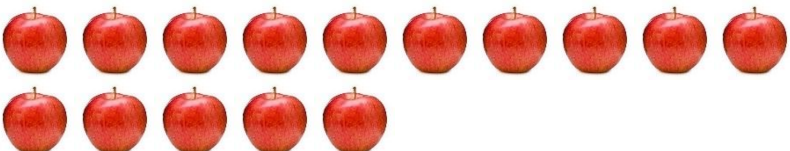
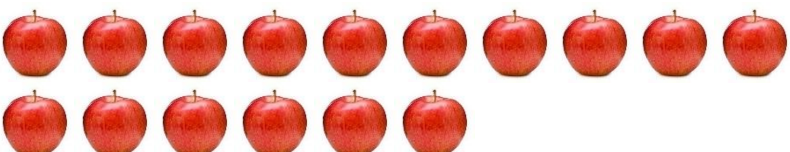
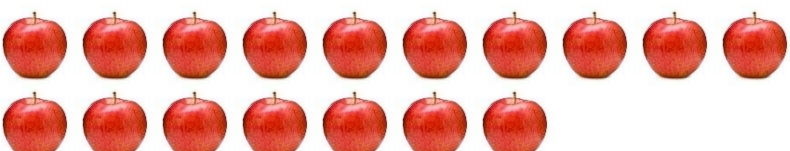
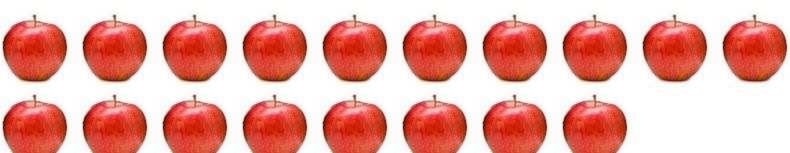
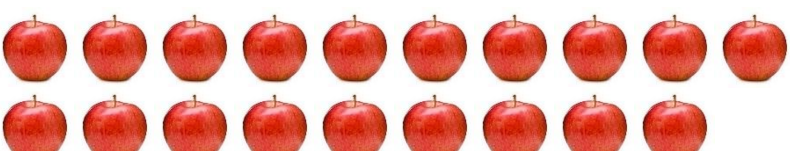
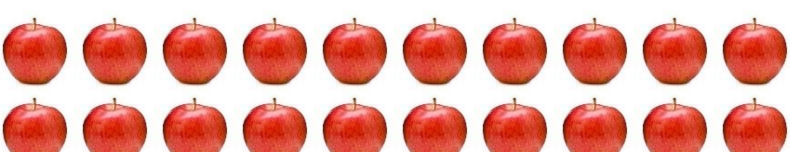
मात्राएँ

ऊ	ू	शू		ू
ए	े	युने		े
ऐ	ै	मै		ै
ओ	ो	सेओ		ो
औ	ौ	पौम		ौ

गिनती

1	इद	
2	निश	
3	शुम	
4	पूअ्	
5	ड	
6	टुग	
7	तिश	
8	राय्	
9	गुई	
10	साए	
11	सिहिद	

गिनती

12	सोनिश	
13	सोरुम	
14	सपह्	
15	सोडा	
16	सोरुक	
17	सस्तिश	
18	सोराय्	
19	सस्गुई	
20	नीजा	

1	1	1	1	
2	2	2	2	
3	3	3	3	
4	4	4	4	
5	5	5	5	
6	6	6	6	
7	7	7	7	
8	8	8	8	
9	9	9	9	
10	10	10	10	

11	11	11	11	
12	12	12	12	
13	13	13	13	
14	14	14	14	
15	15	15	15	
16	16	16	16	
17	17	17	17	
18	18	18	18	
19	19	19	19	
20	20	20	20	

हिंदी वर्णमाला

स्वर

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ
ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	

व्यंजन

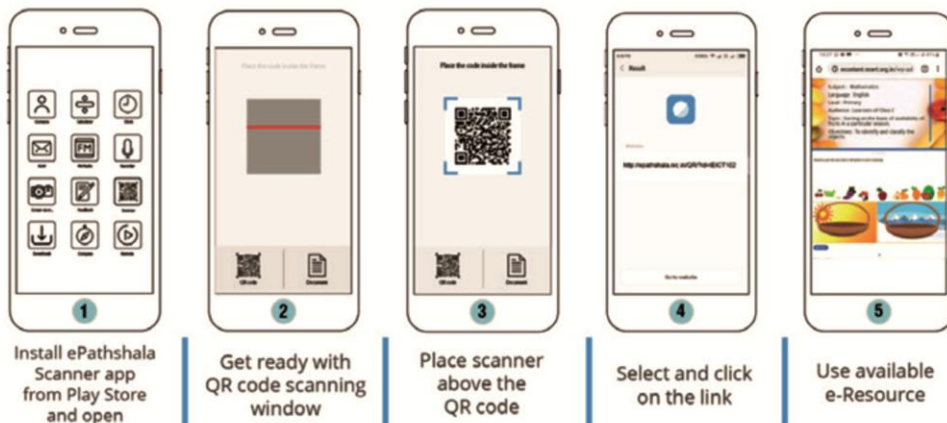
क	ख	ग	घ	ङ	
च	छ	ज	झ	ञ	
ट	ठ	ड	ढ	ण	
त	थ	द	ध	न	
प	फ	ब	भ	म	
य	र	ल	व	श	
ष	स	ह	क्ष	त्र	ज्ञ

ePathshala

Step-by-Step guide for users to access e-resources linked to QR Codes

The coded box placed on the first page of every chapter is called quick Response (QR) Code. It will help you to access e-resources such as audios, videos, multi-media, texts, etc. related to themes given in the chapter. The first QR code is to access the complete e-textbook. The subsequent QR codes will help you access the relevant e-resources linked to each chapter. This will help you enhance your learning in a joyful manner.

Follow the steps given below and access the e-Resources through your smartphone or tablet using ePathshala .

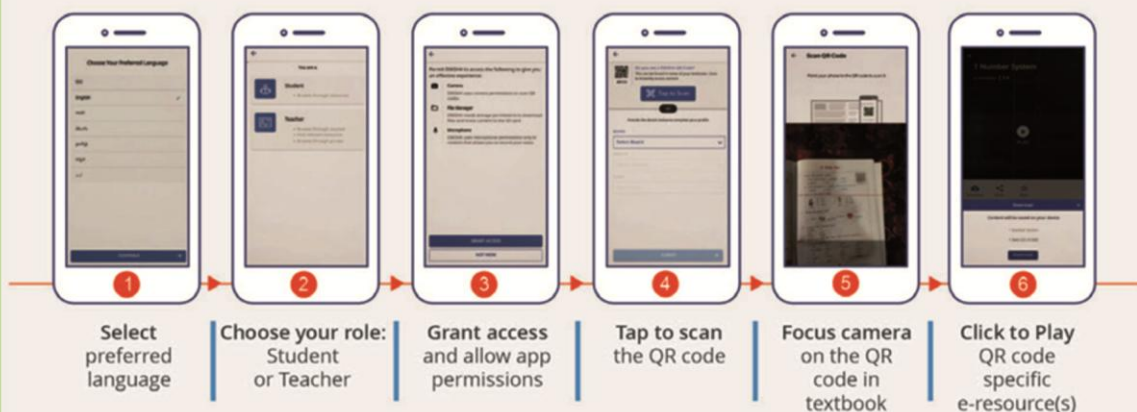


For accessing the e-Resources using e-Pathshala on desktop or laptop follow the step stated below:

Go to <https://epathshala.nic.in/topics.php> and enter the alphanumeric code given below the QR code

DIKSHA

Download DIKSHA app from Google Playstore and follow the steps given below and access the e-Resources through your smartphone or tablet using DIKSHA .



For accessing the e-Resources using DIKSHA on desktop or laptop follow the step stated below:

Go to <https://diksha.gov.in/resources> and enter the alphanumeric code given under the QR code

**PREPARATION OF BILINGUAL PRIMERS (EARLY GRADE) FOR
BHARATIYA LANGUAGES JOINTLY BY CIIL & NCERT (Phase-1)**

SCHEDULED LANGUAGES

Sl. No.	Languages	Sl. No.	Languages	Sl. No.	Languages
1	ASSAMESE	9	KONKANI	17	SANSKRIT
2	BENGALI	10	MAITHILI	18	SANTALI
3	BODO	11	MALAYALAM	19	SINDHI
4	DOGRI	12	MANIPURI	20	TAMIL
5	GUJARATI	13	MARATHI	21	TELUGU
6	HINDI	14	NEPALI	22	URDU
7	KANNADA	15	ODIA		
8	KASHMIRI	16	PUNJABI		

NON - SCHEDULED LANGUAGES

Sl. No.	Languages	Sl. No.	Languages	Sl. No.	Languages
1	ADI	20	KINNAURI	39	MISING
2	ANAL	21	KISAN (KUNHU)	40	MIZO
3	ANGAMI	22	KODAVA	41	MOGH
4	AO	23	KOKBOROK	42	MUNDARI
5	BHILI (VASAVA)	24	KOLAMI	43	NYISHI (NISSI)
6	BHUTIA	25	KONDA	44	RABHA
7	BISHNUPRIYA MANIPURI	26	KORKU	45	RAI
8	DEORI	27	KORWA	46	SHERPA
9	DIMASA	28	KOYA	47	SAVARA (SORA)
10	GADABA (GUTOB)	29	KUI	48	SÜMI (SEMA)
11	GARO	30	KUKI	49	TAMANG
12	HALBI	31	KURUKH	50	TANGKHUL
13	HMAR	32	KUZHALE (KHEZHA)	51	TANGSA
14	JATAPU (KUVI)	33	LEPCHA	52	TIWA (LALUNG)
15	JUANG	34	LIANGMAI	53	TULU
16	KABUI	35	LIMBU	54	WANCHO
17	KARBI	36	LOTHA		
18	KHANDESHI	37	MAO		
19	KHARIA	38	MISHMI (IDU)		



भारतीय भाषा संस्थान

Central Institute of Indian Languages

(Department of Higher Education, Ministry of Education, GoI)
Manasagangotri, Mysuru - 570 006

☎ 0821 2515820 (Director) / ✉ ada-ciilmys@gov.in



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

National Council of Educational Research and Training

Sri Aurobindo Marg
New Delhi - 110016

☎ 011 2696 2580 / ✉ dceta.ncert@nic.in